

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०५/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपना मूलस्वरूप... सभी अपने आत्मा की लाइट को देखते रहे.. आत्मा से लाइट निकल रही है... अपने सत्य स्वरूप को, मूलस्वरूप को सभी स्पष्टता से देखें.. और अपने मूलस्वरूप का अनुभव कीजिए... देखिए, आप आत्मा से टॉर्च के रूप में लाइट निकल रही है... आंखें तो निमित्त है बाहर का दृश्य देखने के लिए पर आंखों द्वारा देखने वाली वह आत्मा की लाइट है... सभी गहराई से अपने लाइट को देखें.. आपको आनंद आएगा।

जब आप आत्मा आपके मूलस्वरूप को देखती है तब आप आत्मा को आंतरिक खुशी मिलती है। आंतरिक खुशी के लिए आपको बाहरी खुशियां ढूंढने की जरूरत नहीं है। आप अभ्यास करना — कभी अगर आप आत्मा की स्थिति थोड़ी ऊपर नीचे अगर हो जाती है, तो उस समय आप कॉन्ससियसली बैठकर आप आत्मा की लाइट को देखना। कुछ समय के लिए ही सही, कुछ सेकंड के लिए ही सही। कभी मायावश होकर अगर आप उदास या नाराज या डिस्टर्ब स्थिति में जाते हो, उस समय आप आत्मा कॉन्ससियसली बैठकर अपने मूलस्वरूप को देखना। एक मिनट के लिए आप आपके मूलस्वरूप को देखते जाना। आप मन ही मन एक-एक सेकंड काउंट करके, एक मिनट तक आप आपके मूलस्वरूप को देखना। फिर देखना आप जो मायावश, परवश होकर आप उदास स्थिति में या नाराज या डिस्टर्ब स्थिति में गए थे, फिर आपने कॉन्ससियसली बैठकर एक मिनट के लिए आप आत्मा की लाइट को देखा, आप आत्मा के मूलस्वरूप को देखा, उसके बाद आप आपकी स्थिति को चेक करना। क्या जो उदास भरी, नाराज भरी स्थिति आपकी पहले थी, एक मिनट के अपने ही मूलस्वरूप को देखने के बाद क्या स्थिति में

कुछ परिवर्तन आया? अगर आपको परिवर्तन ज्यादा नहीं लग रहा तो और आगे कुछ मिनटों के लिए आप आपके मूलस्वरूप को सिर्फ देखना। जैसे ही आप आपके मूलस्वरूप को देखेंगे, आप आत्मा की लाइट ऑन हो जाएगी और उस कारण से जो भी मायावश आपकी उदास भरी या नाराज भरी स्थिति बन गयी थी, आप आत्मा की लाइट को ऑन करने से उस उदास भरी, नाराज भरी विपरीत ऊर्जा की मुक्ति हो जाती है।

आप आत्मा की शुद्ध ऊर्जा, लाइट को देखते ही, वह लाइट से ही वह शुद्ध ऊर्जा आपके मन-बुद्धि-संस्कारों में भर जाते हैं। जहां से विपरीत मायावी अस्तित्व ने आपके मन को परवश करके मन में विचार डाले, जिससे आप आपकी स्थिति को नीचे लेके गए और उदास भरी अवस्था में पहुंच गए या नाराज भरी अवस्था में पहुंच गए। क्योंकि आप मूलस्वरूप में नहीं थे इसलिए आपके मायावी अस्तित्व ने वह विचार आपके मन में डाल दिए। आपके मन में वो लगातार विचार देने लगा। जैसे ही आपने लाइट ऑन कर दी, वह लाइट आपके, आप जैसे ही आप आत्मा ने आपकी लाइट ऑन कर दी, वह विपरीत मायावी अस्तित्व उस लाइट से ही वहां से हट जाता है। आप आत्मा की लाइट के आगे कोई भी मायावी अस्तित्व कभी भी ठहर नहीं सकता। आप आत्मा की लाइट बहुत पावरफुल है, इसलिए कभी भी कुछ क्षण के लिए भी, अगर आपकी स्थिति ऊपर नीचे हो जाए, तो आपका एक ही काम है — बस कुछ सेकंड के लिए, कॉन्ससियसली आप आत्मा आपकी लाइट को देखते रहना। सारा खेल लाइट के ऑन होने पर है। किसी को भी अपने जीवन में फिलहाल जिस परिस्थिति में आप हो और अगर आप चाहते हो कि उस परिस्थिति से आप जल्द से जल्द बाहर निकलो, आपको रास्ते मिल जाएं, कोई भी यह प्रयोग कर सकता है। सिर्फ आपको आपके लाइट को ऑन करना होगा।

आपको कॉन्ससियसली हर कर्मों में आप आत्मा की लाइट को ऑन रखना होगा। जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप को हर कर्मों में प्रैक्टिकली उतारते जाओगे, उतना-उतना आपकी स्थिति ऊपर

उठती जाएगी। जिस किसी को आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर अपने अंदर परिवर्तन नहीं दिख रहा है, उसके लिए सबसे सहज और आसान तरीका है, सिर्फ आप आत्मा की लाइट को ऑन रखना।

सबसे पहले आप एक कर्म से शुरू करना कि उस कर्म में आप आत्मा की लाइट ऑन रहे। सबसे पहला मुख्य कर्म है शरीर के लिए, वह है शरीर को भोजन-पानी खिलाना। अगर किसी को अपने अंदर तेजी से परिवर्तन करना है, तो सबसे पहले आपको आपके शरीर के लिए, जब-जब आप कुछ भोजन या नाश्ता या फल खिलाते हो, दिन भर में जब-जब शरीर के लिए पानी पिलाते हो, उस हर समय आप कॉन्ससियसली, आप आत्मा की लाइट को ऑन रखते हुए भोजन का एक-एक निवाला शरीर को खिलाते जाना। जब-जब आप शरीर को पानी पिलाएंगे, तब-तब हर एक घूंट में आप आत्मा की लाइट को ऑन रखकर, आप आत्मा अपनी लाइट को देखते हुए, शरीर को पानी पिलाना और जितना जल्दी जिसको अपने अंदर हर प्रकार से परिवर्तन करना है तो भोजन और पानी शरीर को खिलाते समय, पानी को पिलाते समय, मूलस्वरूप में ही वह कर्म करना और दूसरा अति महत्वपूर्ण बात है, भोजन और पानी शरीर को देते समय संपूर्ण मौन में देना। क्योंकि जितना आप भोजन को, शरीर को खिलाते समय मौन में रहेंगे और अपने लाइट को देखते हुए करेंगे, उस एक कर्म में आपकी ही ऊर्जा आप में रहती है और आप आपकी ही ऊर्जा से, तेजी से परिवर्तन हो सकते हो। भोजन शरीर को खिलाते समय जब-जब कोई बातें करते हैं, तो उन बातों से और-और ऊर्जाएं बातों के द्वारा, भोजन शरीर को खिलाते समय आपके शरीर के अंदर प्रवेश हो जाती है। भोजन शरीर को खिलाते समय, बातें करते हुए आपने किसी को याद किया तो उनकी भी ऊर्जा आपके अंदर प्रभावित हो जाती है। फिर आपके अंदर सारी मिक्स ऊर्जाएं आ जाती है और इतनी सारी मिक्स ऊर्जाओं को लेकर आप आत्मा आपका परिवर्तन कैसे कर सकोगे? इसलिए भोजन और पानी जब भी कभी शरीर को देना है, तो संपूर्ण मौन में देना और एक-एक निवाले को शरीर को खिलाते समय, अपने लाइट को देखकर ही शरीर को खिलाना।

इससे और एक फायदा क्या होगा? भोजन, सबसे पहले जो अन्न है, वो जिस खेत से बना है, जहां से वो बनकर जो भी दुकान में पहुंचा है, दुकान से, जहां से भी आपके घर पर वो अनाज बना है, अनाज आ गया है; उसके बाद उस अनाज को जिस किसी ने भी पकाया है, अभी वो व्यक्ति जिसने भोजन बनाया, उसकी स्थिति, वो भी अन्न पकाते समय भोजन में उतर गयी। तो जिस किसान ने अनाज को उगाया, उसकी स्थिति, उसकी ऊर्जा; फिर जहां से वो अनाज जिस गांव से, जिस भी गाड़ियों से दुकान तक पहुंचा, वहां पर वो दुकानदार की ऊर्जा उस अनाज में पड़ी है। फिर वहां से, जहां से जैसे भी ट्रांसपोर्ट से, आपके घर के किचन तक वो अनाज पहुंचा, उन सभी व्यक्तियों की ऊर्जा उस अनाज में पड़ी है। फिर आपके घर में जिस किसी ने उस अनाज को पकाया, भोजन बनाया उस व्यक्ति की ऊर्जा, वो उस समय जिस स्थिति में अन्न पका रहा था, उसके जो विचार चल रहे थे, उसकी जो अवस्था थी, वो भी विचार ऊर्जा के रूप में उस भोजन में उतरा है। अभी वो भोजन सिर्फ भोजन नहीं है। उसमें किसान से लेकर दुकानदार से लेकर गाड़ियां चलाने वालों से लेकर खाना पकाने वाले से लेकर — सभी की ऊर्जा उस भोजन में आई है, उतरी है। अब भोजन आपके सम्मुख आया। अगर आपने मूलस्वरूप स्थिति में, उस भोजन को शरीर को नहीं खिलाया, तो जितनों की भी ऊर्जा उस भोजन में है, वह सारी ऊर्जा आपके अंदर प्रवाहित हो जाएगी। क्योंकि मूलस्वरूप में ना खाने के कारण, एज इट इज़ सारी ऊर्जा आपके अंदर आ गयी। एक है, भोजन से पहले सकाश देके उस अन्न को शुद्ध करना, उस अन्न के सभी वाइब्रेशन को शुद्ध करना। जब-जब आप भोजन को सकाश देखते हो, उस समय उसके वाइब्रेशन चेंज होते हैं। सकाश से उसके अंदर आप आत्मा की ऊर्जा भरती जाती है। पर सिर्फ सकाश देकर कुछ नहीं होगा। जब तक वो अन्न संपूर्ण आप आत्मा की मूल स्थिति में स्थित रहकर, आपके शरीर के अंदर नहीं जाता, तब तक उसका कुछ ना कुछ प्रभाव आपको आपके ऊपर जरूर दिखेगा। क्योंकि सिर्फ आपने सकाश दिया और मूलस्वरूप में भोजन शरीर को नहीं खिलाया, तो भी वह अन्न आपके शरीर को संपूर्ण रूप से स्वास्थ्य नहीं देगा। क्योंकि आपने मूलस्वरूप नहीं देखा, तो वह भोजन कोई मायावी अस्तित्व ने शरीर को खिलाया। फिर वो मायावी अस्तित्व और

स्ट्रांग होता जाएगा। इसलिए सकाश तो देना है। उसके बाद एक-एक निवाले को अपनी मूलस्वरूप स्थिति में रहकर शरीर को खिलाना है।

मूलस्वरूप संपूर्ण रूप से एक बड़ा फिल्टर का काम करता है। सभी नेगेटिव ऊर्जाओं को वो मुक्त करता है। जैसे ही आप मूलस्वरूप में निवाला शरीर को खिलाते हो, तत्क्षण उस निवाले के अंदर की सारी विपरीत ऊर्जाएं, जो शरीर को स्वास्थ्य देने के लिए लाभदायक नहीं है, जो शरीर के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारी ऊर्जा नहीं है, ऐसी ऊर्जा को मूलस्वरूप में रहने के कारण, मुक्ति ऑटो में मिल जाती है। उसके लिए आपको कोई अलग संकल्प करने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि हर निवाले में आपका मूलस्वरूप ऑन है।

आपने अगर सिर्फ सकाश दिया अन्न को और भोजन करते समय आपने बातें की, आपने यहां-वहां की बातें की, किसी को याद किया, किसी स्थान को याद किया, तो सकाश से ऊर्जा को आपने शुद्ध तो किया भोजन में, पर आप शरीर को खिलाते समय जिस-जिस को याद करेंगे बातों के द्वारा, उनकी ऊर्जाएं उस हर एक निवाला में मिक्स हो ही जाती है। यह सूक्ष्म प्रोसेस है और अति फास्ट प्रोसेस है। इस प्रोसेस को आपको समझना होगा। इसलिए अगर आप स्थिति में रहकर शरीर को भोजन खिलाने का कर्म एक्यूरेटली कर पाओगे, तो बहुत जल्दी आपके अंदर परिवर्तन आ जाएगा। आप तेजी से परिवर्तित हो जाओगे क्योंकि भोजन के हर निवाले में सिर्फ आप आत्मा की ही ऊर्जा आपके शरीर में जाती है। इसलिए जब कभी कोई शरीर को भोजन खिलाते समय स्थिति में नहीं रहते या किन्हीं बातों में रहते हैं, तो उस समय कोई भी चेक करे, भोजन के बाद शरीर में कुछ ना कुछ तकलीफें आपको मिलेगी। वह भोजन आपके शरीर को स्वास्थ्य नहीं देगा। फिर शरीर में कुछ ना कुछ परेशानियां होगी। फिर आप आत्मा को तपस्या करने के लिए आपका शरीर सहयोग नहीं देगा।

इसलिए अगर तेजी से आपको आपके अंदर परिवर्तन करना है, तो भोजन और पानी शरीर को खिलाते समय, संपूर्ण मौन में करें और मूलस्वरूप में ही करें। कोई दिल से इस कर्म को इस प्रकार तीन

दिन भी करे, तो भी आप देखना आपका कोई ऐसा संस्कार जिससे आप परेशान हो, उसके कारण दूसरे परेशान है, दूसरों को दुख मिल रहा है, वह संस्कार मुक्त हो जाएगा। पर दिल से लगातार तीन दिन के लिए कोई भी सिर्फ इस भोजन के कर्म को संभाले। जब-जब आप शरीर को कुछ देंगे, पानी के रूप में या अन्न के रूप में, परिणाम निश्चित मिलेगा।

आपका मायावी स्वरूप अगर अति तेज होगा, तो वो आपको भोजन शरीर को खिलाते समय शांत नहीं रखेगा। यह लिखकर लेना। वो कुछ ना कुछ बातें सोचता ही रहेगा और आपके मुख से बुलवाता ही रहेगा। पर अगर आपको आपके अंदर परिवर्तन करना है, तो आप आत्मा को दृढ़ता से, अपने उस कर्म को संपूर्ण मूलस्वरूप में रहकर और मौन में रहकर करना होगा। जैसे-जैसे आप दृढ़ता से करते जाओगे, आपका वह मायावी अस्तित्व कमजोर होता जाएगा, होता जाएगा और आपकी यह धारणा लगातार रहने से, वह मायावी अस्तित्व कभी भी कब का मुक्त हो जाएगा। आपको पता भी नहीं चलेगा। पर आपको आपकी धारणा को नहीं छोड़ना है।

हर कोई इसे प्रयोग में ला सकता है। क्योंकि भोजन के रूप में, पानी के रूप में आप कोई अनाज, अनाज के अंदर के न्यूट्रिएंट शरीर को नहीं देते हो। भोजन के रूप में आप शरीर को भी ऊर्जा ही देते हो। जो भोजन शरीर में एनर्जी क्रिएट करता है, वो एक्जुअली भोजन दिखने को मटेरियल है पर आप ऊर्जा ही शरीर को उससे देते हो। इसलिए जितना-जितना आप इस कर्म को मौन में रहकर मूलस्वरूप में करेंगे, उतना-उतना सिर्फ आपका ही ओरा नहीं बल्कि आप जिस स्थान में रहते हो, फिर आपका घर हो या कोई और स्थान में आप रहते हो; आप एक से उस कर्म की मूलस्वरूप में रहकर करने की धारणा से, मौन में रहकर करने की धारणा से, वहां का वायुमंडल, वहां के स्थान का ओरा चेंज हो जाता है।

आप आत्मा की लाइट में किसी भी प्रकार की मायावी अस्तित्व उपस्थित नहीं रह सकते। अगर आपकी लाइट ऑन है तो कोई भी मायावी अस्तित्व किसी का भी हो, उस समय वह नहीं इमर्ज होगा। यह आप आत्मा के लाइट की ताकत है। इसलिए आपका काम है सिर्फ उस लाइट में सदा रहना। मायावी देह

की बातें तो बहुत की। अभी उस लाइट में रहेंगे। जितना-जितना लाइट में रहेंगे, उतना-उतना आपके मायावी अस्तित्व, आपके मायावी संस्कार मुक्त हो ही जाएंगे।

परमात्मा ने बहुत सहज विधि दी है। बस आपकी लाइट को ऑन रखना, सदैव। उस लाइट में सब कुछ है। उस ही लाइट में परिवर्तन है। उस ही लाइट में रिलाइजेशन है। उस ही लाइट में माइट है, परिवर्तन की। तो सभी आत्माएं अपनी लाइट को ऑन रखते हुए, कर्मों में आने का प्रयास करना।

सभी के लिए आज का यह एक होमवर्क है — सबसे पहले आप चेक करना कि क्या शरीर को भोजन खिलाने का कर्म और पानी पिलाने का कर्म, आप मूलस्वरूप में रहकर मौन में रहकर करते हो? और अगर नहीं करते हो, तो चेक करना क्या आपकी सच में दिल है कि आपको तेजी से आपके अंदर परिवर्तन करना है? तो क्या आपकी सच्ची दिल है, इस कर्म को, इस अवस्था में करने का? हर कोई अपने से चेक करे। एक कर्म की मूलस्वरूप की धारणा से, जब वो धारणा अति पक्की होती जाएगी, अपने आप दूसरे कर्मों में भी मूलस्वरूप अवस्था को पक्का करने में आसानी होगी। शुरुआत किसी एक कर्म से करनी होगी। और हर कर्म में थोड़ा ना थोड़ा करते रहने से आप आत्मा के अंदर वह संस्कार उतरता जाएगा। हर कर्म में कुछ ना कुछ सेकंड के लिए ही सही, मूलस्वरूप को जरूर देखते हुए करना और एक कर्म अपना रोज का दिन का फिक्स करना, जिसमें आप संपूर्ण रूप से मूलस्वरूप में रहकर ही उसे करेंगे। आपको आनंद आएगा। आप ही के अंदर परिवर्तन दिखेगा।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः